



कृषि दर्शिका 2024



निदेशालय विस्तार सेवायें
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.) 492012

पोटाश — 30 (सामान्य), 40 (संकर)

सिंचाई के लिये फसल की क्रांतिक अवस्थाएँ : शाखा बनते समय, फूल आते समय तथा दाना भरते समय।
उपज (क्वि./हे.) : 8—15 (सामान्य), 18—20 (संकर)।

चना

भूमि का चयन :

चने की खेती हल्की से भारी भूमियों में की जाती है, किन्तु कन्हार भूमि अधिक उपयुक्त है।

बुवाई का उचित समय : 15 अक्टूबर से 30 नवम्बर।

बीज की मात्रा (कि.ग्रा./हे.) : 75—80 (समय से), 100 (देर से/उतेरा), 50—55 (साई)

बीजोपचार :

बुवाई के पूर्व कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार करें। इससे बीज भूमिजनित फफूंदयुक्त बीमारियों से सुरक्षा प्रदान होती है।

कल्चर का उपयोग :

बीजोपचार के बाद बीज को राइजोबियम एवं पी.एस.बी. तरल जैव उर्वरक के प्रत्येक की 1 मिली. मात्रा -0.2 प्रतिशत, शक्कर/गुड़ के घोल से पतला कर प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। ट्राईकोडर्मा ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। एक एकड़ के लिये आवश्यक बीज लें तथा पानी के हल्के छींटे देकर बीज को नम करें, फिर कल्चर को बीज पर छिड़क कर अच्छी तरह मिलावें। बीज छाया में सुखाएँ तथा शीघ्र ही बोयें। उपचारित बीज धूप में न सुखाएँ।

पंक्ति की दूरी (से.मी.) : 30 सामान्य, 50 साई

पोषक तत्वों की मात्रा (कि.ग्रा./हे.) : नत्रजन — 20

स्फुर — 40—50

पोटाश — 20

गंधक — 20

सिंचाई के लिये फसल की क्रांतिक अवस्थाएँ : शाखाएँ बनते समय, फूल बनने के पूर्व तथा दाना भरते समय
उपज (क्वि./हे.) : 8—10 (असिंचित), 18—20 (सिंचित)

तिवड़ा

खेत का चयन :

तिवड़ा फसल की खेती के लिये डोरसा एवं कन्हार भूमि उत्तम है। उतेरा भी साधारणतः डोरसा एवं कन्हार भूमियों में डाला जाता है।

बुवाई का उचित समय : 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर।

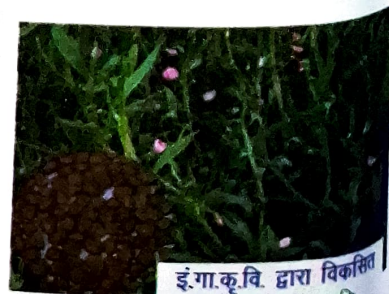
बीज की मात्रा (कि.ग्रा./हे.) : 40—50 (समय से), 75—90 (उतेरा)।

बीजोपचार :

बीज को बुवाई के पहले 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम या फफूंदनाशक दवा प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजोपचार करें। बीजोपचार के बाद बीज को राइजोबियम एवं पी.एस.बी. तरल जैव उर्वरक के 1 मिली. मात्रा को 5 गुना पतलाकर प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें। एक एकड़ के लिये आवश्यक बीज लें तथा पानी के हल्के छींटे देकर बीज को नम करें, फिर कल्चर को बीज पर छिड़क कर अच्छी तरह मिलावें। बीज छाया में सुखाएँ तथा शीघ्र ही बोयें। उपचारित बीज धूप में न सुखाएँ।

पंक्ति की दूरी (से.मी.) : 30

पोषक तत्वों की मात्रा (कि.ग्रा./हे.) : नत्रजन — 20



इ.गा.कृ.वि. द्वारा विकसित
महातिवड़ा प्रजाति

स्फुर - 40-50

पोटाश - 20

गंधक - 20

सिंचाई के लिये फसल की क्रांतिक अवस्थाएँ : फूल आने से पूर्व तथा दाना बनते समय।
उपज (क्विं./हे.) : 5-6 (उत्तेरा), 10-12 (बतर)।

मसूर

खेत का चयन :

मसूर की खेती के लिये डोरसा तथा कन्हार भूमि उपयुक्त है। अच्छी पैदावार हेतु खेत की दो से तीन बार गहरी जुताई करके पाटा चलावें। गोबर की खाद या नाडेप कम्पोस्ट उपलब्ध होने पर लगभग 5 टन खाद/हे.

जुताई के समय खेत में डालें।

: 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर।

बुवाई का उचित समय

: 40-50

बीज की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)

बीजोपचार :

स्वस्थ बीजों को बुवाई के पूर्व बीजों को मसूर के राइजोबियम तरल जैव उर्वरक के प्रत्येक की 1 मिली. मात्रा -0.2 प्रतिशत, शक्कर/गुड़ के घोल से पतला कर प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। ट्राइकोडर्मा कल्चर, प्रत्येक का 5-10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर तुरंत बुवाई करें। उपचारित बीज हमेशा छायादार स्थान में ही रखें।

पंक्ति की दूरी (से.मी.)

: 25

पोषक तत्वों की मात्रा (कि.ग्रा./हे.):

नत्रजन - 20

स्फुर - 40-50

पोटाश - 20

गंधक - 20

सिंचाई के लिये फसल की क्रांतिक अवस्थाएँ : फूल आने से पूर्व तथा दाना बनते समय।
उपज (क्विं./हे.) : 12-15

सरसों

खेत का चयन :

सरसों की खेती उत्तम जल निकास एवं उत्तम भूमि संवर्धन के साथ सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। सिंचित अवस्था में डोरसा एवं बलुई-दोमट भूमि का चुनाव करें तथा असिंचित अवस्था में भरी कन्हार जैसे- काली-भारी भूमि, जिसमें नमी अधिक मात्रा में संचित रहती है, अधिक उपयुक्त होती है।

बुवाई का उचित समय : 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर

बीज की मात्रा (कि.ग्रा./हे.) : 4-5

बीज उपचार :

बीज को बुवाई के पूर्व कार्बेन्डाजिम नामक फफूँदनाशक दवा से 1.5 से 2.0 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। जैव उर्वरक से उपचार हेतु एजोस्पाइरिलम तथा पी.एस.बी. तरल जैव उर्वरक के प्रत्येक की 1 मिली. मात्रा -0.2 प्रतिशत, शक्कर/गुड़ के घोल से पतला कर प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें।

पंक्ति की दूरी (से.मी.)

: 45

पोषक तत्वों की मात्रा (कि.ग्रा./हे.):

नत्रजन - 100 (सिंचित), स्फुर - 60, पोटाश - 40

सिंचाई के लिये फसल की क्रांतिक अवस्थाएँ : शाखा बनते समय, फूल आना, फल्ली बनने

समय

उपज (क्विं./हे.)

12 (असिंचित), 20-25 (सिंचित)। तथा दाना बनते



इ. गा. कु. द्वारा विकसित
छत्तीसगढ़ सरसों